पढ़ कर किसी ईसाई को दे दो

धर्म तुला

हिन्दू धर्म और ईसाई मत की

तुलना

गुरु विरजानन्द स्मृति
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5267
दयानन्द महिला महाविद्यालय

लेखक--बिहारी लाल शास्त्री

प्रकाशक--प्रेम पुस्तक भण्डार, बरेली

सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5267
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

प्रथम बार
२०००
मूल्य २५ पैसे

ईसू यूसुफ़ का बेटा था ख़ुदा का नहीं
इंजील की साक्षी

"इब्राहीम के सन्तान दाऊद के संताम ईसू ख्रीष्ट की वंशावली इब्राहीम का पुत्र इसाक इसाक का पुत्र याकूब याकूब के पुत्र यहूदा और उसके भाई हुए।

इलीहुद का पुत्र इलियाजर इलियाजर का पुत्र मतान मत्तान का पुत्र याकूब याकूब का पुत्र यूसुफ जो मरियम का स्वामी था जिससे ईसू जो ख्रीष्ट कहावता है पैदा हुआ।

मत्ती की इंजील पर्व १ आयत १-१७

जय भारत प्रेस, बरेली।

बहुत वर्ष बीते ईसाइयों की ओर से एक पुस्तक उपर्युक्त (धर्म तुला) नाम की छपी थी। इसमें हिन्दू धर्म की ऊँट पटांग आलोचना की गई थी। इसमें हिन्दुओं के माननोय महापुरुषों को खूब गालियाँ दी गई थीं। हिन्दू धर्म के विरुद्ध एक पुस्तक तो एक ईसाई पादरी ने इतनी बेहूदा लिखी थी कि आज यदि वह पादरी जीवित होता तो उसकी जेल करा दी जाती क्योंकि उस समय हिन्दू सोया हुआ था। आज आर्यसमाज ने उसे जगा दिया है।

आज हम ईसाई और हिन्दूओं के धर्म की उन्हीं के लिखे अनुसार तोलते हैं। हमारी इस धर्मतुला की तोल को देखिए:—

इंजीलों में महात्मा यीसू के चमत्कारों की अनेक गाथायें लिखी हुई हैं। ईसायत का सारा आधार ही इन चमत्कारों (मोज़ज़ों)पर है।

महात्मा ईसू ने अन्धों को आँखें दी कोढ़ियों को चंगा किया। लूले लंगड़ों को अच्छा कर दिया। पाँच रोटियों से कई सहस्र को भोजन करा दिया और १२ टोकड़े उस ज्योनार में जूठन बची। ऐसी अनेक गप्पें

इंजील में पढ़ने को मिलेंगी। मुर्दे को कई दिन बाद कब्र में से जीता उठाया, आदि-आदि करामातों पर ही ईसाइयत की बुनियाद रक्खी हुई है।

अच्छा मान भी लिया जाय कि श्री यीसूमसीह बड़ भारी करामाती रहे हों, परन्तु चमत्कार दिखाने का जब वास्तविक अवसर आया तब यीसू सब सिट्टी-पिट्टी भूल गए। जब वे पकड़ गये तो उनका रात भर अपमान होता रहा और उनका प्रमुख शिष्य पतरस वह सब कुछ देखता रहा और यहूदी मन्दिर के महन्त के नौकरों के पूछने पर उसने यीसू से अथवा कोई सम्बन्ध रहने से इन्कार कर दिया। यह था इस शिष्य की नैतिकता का बल ! ईसाई कहते हैं कि यह सब कुछ इसलिए हुआ कि ऐसी भविष्य वाणियाँ थीं। ईश्वर ने यह पहले से ही निश्चित कर रक्खा था। परन्तु ईश्वर ने यह बेतुकी बातें क्यों निश्कित करीं और भविष्यद् वक्ताओं ने ऐसी बुद्धि विरुद्ध भविष्य-वाणियाँ ही क्यों कीं इसका उत्तर इसाइयों के पास कुछ नहीं है। यीसू मसीह को इस अवसर पर चमत्कार दिखाना था।

यीसू अब सूली पर चढ़े हुए वे उस समय आस-

पास खड़े हुए यहूदी ताने दे रहे थे।

"लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षों ने भ उसके संग ठट्टा कर कहा—"उसने औरों को बचाया जो वह ईश्वर का चुना हुआ ख्रीष्ट है तो अपने को बचावे।" ३६

योद्धाओं ने भी उससे ठट्टा करने को निकट आके उसे सिरका-दिया। ३७

और कहा जो तू यहूदियों का राजा है तो अपने को बचा। ३८ (लूका की इंजील)

यीसू मसीह की कैसी दयनीय स्थिति थी क्रास पर चढ़े कष्ट से बेचैन और इधर विरोधियों के ताने सुनने पड़े।

मसीह ने ईश्वर को पुकारा-'एली, एली, लाना शवक्तनी' हे ईश्वर, हे ईश्वरतूने मुझे क्यों छोड़ दिया?

परन्तु ईश्वर भी चुप रहा। अपने इकलौते पुत्र चुने हुए जन का अपमान कष्ट, पुकार सब कुछ देखते हुए भी ईश्वर टस से मस न हुआ। और आखिर मसीह ने दम तोड़ दिया।

अब विचारिए कि ऐसे निशक्त असहाय व्यक्ति

के अनुयायी बनने से क्या परिणाम हाथ आयेगा ?

खंजरी पीट पीटकर पादरी गाया करते हैं—

"यीसू मसीह मेरे प्राण बचैया" यीसू मसीह। कितनी मूर्खता की बात है कि जो ईसू अपने प्राण न बचा पाया वह इन ईसाइओं के प्राण बचा लेगा !! मिथ्या आशा।

हाँ, खंजरी बजाकर गाने से पेट पालन को मिशन से रोटियाँ अवश्य मिल जाती हैं।

ईसू मसीह सूली पर कष्ट से व्याकुल होकर अपने आस्मानी बाप को पुकार रहे थे। पर वह आस्मानी बाप चुप्पी साध गया, और यीसू को प्राण त्यागना पड़ा।

अब तुलना कीजिए भक्त प्रह्लाद की कथा से—

प्रह्लाद को हिरण्य कशिपु ने खम्भ से बाँध दिया प्रह्लाद बड़े धैर्य और सन्तोष से अपने पिता को डाट-फटकार सुन रहा था। और मन में सुमर रहा था अपने इष्टदेव भगवान् को। इतने में ही बड़े गर्व और आवेश के साथ हिरण्य कशिपु सिंहासन से उठा। खड्ग म्यान से बाहर निकाली। और गरज कर

प्रह्लाद से कहा—मूर्ख लड़के मैं अब तेरा सिर काटता हूं। बुला कहां है तेरा भबवान् ? प्रह्लाद ने कहा—पिता जी वह तो सर्व व्यापक है, मुझमें आप में, खम्भ और तलवार में भी है।

हिरण्य कशितु ने तलवार उठाई और प्रह्लाद को डाटकर कहा—कहां है तेरा भगवान् ? इतना कहता था कि बड़ें शब्द के साथ खम्भ फट गया

"सत्यंविधातुं निजभृत्यभाषितम्
व्याप्तिं चभूतेष्वखिलेषु चात्मनः।
अदृश्यतात्यद्भूत रूपमुद् वहन्,
स्तम्भेसभायां न मृगं न मानुषम् ॥

--श्रीमद्भागवत स्कंध ७ अध्याय ८ श्लोक ११

अर्थात अपने भक्त के वचन कि वह खम्भ में भी है। सत्य सिद्ध करने को, और सब प्राणियों मैं बराबर अपनी व्यापकता सिद्ध करने को सभा में स्तम्भ मैं अद्भुत रूप धारण किये--न पशु, न मनुष्य आधारूप सिंह का आधा मनुष्य का "नृसिंह" भगवान् प्रकट हुग और हिरण्य कशिपु को धर दबोचा। हिरण्य कशिपु को समाप्त कर दिया। भक्त का जयजयकार हो उठा।

भगवान् के जयजयकार से दिशायें गूंजने लगीं ।

अब सच बताओ कि कौन सी कथा सुन्दर सरस तथा बुद्धि संगत है इंजील की वा श्रीमद्‌भागवत की? भक्त यीसू ठहरता है वा प्रह्लाद ? भगवान् ने किसी की सुनी यीसू की वा प्रह्लाद की ?

प्रह्लाद सफल है यीसू फेल। अतः प्रह्लाद के वैष्णव धर्म में सब ईसाइयों को आना चाहिए। यीसू चीखता पुकारता रहा परन्तु बाप आस्मान से नीचे न उतर सका। और प्रहलाद का प्रभु तत्काल प्रकट हो गया। यदि ईसाई पादरी इस कथा को झूठी कहने की धृष्टता करें तो फिर इंजील का एक-एक अक्षर झूठा है—क्योंकि पुराणों की कथायें इंजील से कहीं अधिक युक्ति युक्त तर्कसंगत और सरस हैं। और यदि ईसाई हिन्दू अवतारों से इन्कार करते हैं तो यीसू का अवतार भी झूठा रहेगा। फिर तो वेदोपनिषद् प्रतिपादित निराकार निर्विकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् ईश्वर को ही मानना पड़ेगा। जो ईश्वर बिना शरीर धारण किए ही सब काम कर सकता है। सहस्रों हिरण्यकशिपुओं को मार सकता है।

और यदि ईसाई इंजील को नहीं त्यागते और योसू के तर्क हीन, बुद्धि विरुद्ध चमत्कारों पर विश्वास लाने को कहते हैं तो पुराण इंजील से लाखों गुना अच्छे हैं। हिन्दू देवी देवताओं के चमत्कारों के आगे ईसा के चमत्कार फीके पड़ जाते हैं।

अब इस उलझन को पादरी कैसे सुलझावेंगे ?

मसीह ने अपने शिष्यों से कहा कि अब मैं पिता के पास जाता हूं। जो पिता के पास न जाऊँगा तो तुम तक "रुहुल कुदस्" पवित्रात्मा नहीं भेज सकूँगा। तो इससे सिद्ध होता है कि योसू शरीर छोड़कर ही पिता (ईश्वर) से मिल सकता था, शरीर सहित नहीं।

परन्तु इंजील के अनुसार तो यीसू कुछ देर के लिए ही शरीर से अलग रहा और फिर शरीर में आ गया। जीवित होकर अपने शिष्यों को दिखाई देता रहा तो ऐसी दशा में पिता परमेश्वर से तो दूर ही रहा फिर पवित्रात्मा कैसे भेजी ?

और जब मसीह शरीर में ही रहे और शिष्यो तथा अन्य लोगो को दिखाई देते रहे, तो कौन से स्थान में थे सोते बैठते कहाँ थे ? भोजन कहाँ करते थे ? शिष्यो

के पास ही बिल्कुल क्यों नहीं रहे ? और यहूदियों को दिखाई क्यों नहीं दिए, खुलकर जनता के सामने क्यों नहीं आए ? उन्हें खुलकर आने में क्या डर था ? यदि कहो कि मसीह का सूक्ष्म सरीर शिष्यों को दिखाई दिया तो फिर स्थूल शरीर क्या हुआ ? कहाँ किस दशा में रहा ? और मसीह क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद जीवित होकर कितने दिन इस पृथ्वी तल पर जीवित रहे ? और कब भौतिक शरीर को छोड़कर स्वर्ग चले गए और वह भौतिक शरीर क्या हुआ ? गाड़ा गया या जलाया गया। वास्तव में इंजील की बातें यीसू का शिष्यों को दिखाई देना वादि सब ऐसे गपोड़े हैं जैसे कि गाँव के ओझा स्याने भूत प्रेतों की कहानियाँ सुनाते हैं। भूतों की लीलायें वर्णन करते हैं वहाँ के मूर्ख लोगों में यह मत चला और यहाँ भी ईसाई अपना प्रचार मूर्ख जंगली लोगों में ही करते हैं।

यीसू का जन्म, मरण, जीवन सब ही उलझा हुआ है। जब श्रीमती मरियम ईश्वरीय आत्मा से गर्भवती हुई थीं और मसीहरूहअल्ला थे तो फिर श्रीमती जी को डर क्या था ? संकोच और लज्जा किस बात की थी ?

परन्तु उनकी उस समय की दशा पढ़िए इंजील और कुरान में ?

"तब उसके स्वामी यूसुफ ने जो धर्मी मनुष्य था और उस पर प्रकट में कलंक नहीं लगाना चाहता था उसे चुपके से त्यागने की इच्छा की।"

(मत्ती पर्व १/वचन २०)

"कुमारी मरियम को गर्भवती जानकर यूसुफ को फिर सन्देह हुआ उसने चुपके से छोड़ना चाहा किन्तु उसे स्वप्न में ईश्वरी दूत ने समझा दियाकि "उसको जो गर्भ रहा है सो पवित्रात्मा से है।"

(मत्ती १/२१)

यहाँ विचारिए कि स्वप्नों की बात पर विश्वास कहाँ तक होना चाहिए ?

कुरान शरीफ में देखिए—

"और (ऐ पैगम्बर) कुरान में मरियम का मजकूर (भी लोगों से बयान) करो कि जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब रुख एक जगह जा बैठी और लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया तो हमने अपनी रूह (यानी जिब्राईल) को उनकी तरफ़ भेजा। तो

वह अच्छे खासे आदमी की शक्ल बनकर उसके रूबरू जा खड़े हुए। वह (उनको देखकर) लगी कहने कि अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं तुमको ख़ुदा का वास्ता देती हूँ (कि मेरे सामने से हट जाओ।

(सूरते मरियम तरजुमा शमशुल उल्मा मौ० नजीरअहमद।)

जिब्राईल ने मरियम को पुत्र होने का सुसमाचार दिया। मरियम गर्भवती हो गयीं तो उनकी क्या दशा थी देखिए—बच्चा पैदा होने का समय आया और पेट में दर्द हुआ तो खजूर के पेड़ के नीचे जा बैठीं। न कोई दायी पास थी न कोई रिश्तेदार स्त्री। अब मरियम बेचैन, अकेली तड़प रही थीं। बोलीं—

'ऐ काश इससे पहले मैं मर चुकी होती और दुनिया के पर्दे से नापैद होकर कभी की भूली बिसरी हो गयी होती।" (सूरते मरियम तर्जुमा श० उ० मौ० नज़ीर अहमद)

इस्लामी कथाओं के अनुसार यहूदियों ने हज़रत जिख़रियां पर जिनकी संरक्षता में, मरियम रहतीं थीं। मरियम के गर्भ का दोष लगायीं और उन्हे मार डाला

तब ईश्वर ने क्यों नही कहा कि गर्भ मेरी आज्ञा से है !

यह सब लेख क्या प्रमाणित करते हैं। यदि मसीह ईश्वर द्वारा उत्पन्न था तो किसी विलक्षण ढंग से पैदा होता जैसे कर्ण कान से, नासिकेत नासिका से। हज़रत मरियम इतना लजाती क्यों थीं कि बालक को चरनी में डाल दिया ?

एक प्रश्न और है संसार भर के पादरीं इसे सुलझा नही सकते। मसीह कहता हैं—

"जिस रीति से यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में था। उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन दिन और रात पृथ्वी के भीतर रहेगा।" (मत्ती की इंज़ील पर्व १२ आयत १४)

यीसू को शुक्रवार के दिन क्रूस पर लटकाया गया और तीसरे पहर तक उसके प्राण निकले, सायं-काल तक कब्र में रक्खा गया। तो शुक्र की एक रात शनिवार का पूरा दिन और रात रविवार को प्रातः जब यीसू की शिष्या मेरी आयी तब कब्र में शव न था तो यीसू कब्र में एक दिन और दो रात रहा फिर वह

प्रतिज्ञा कि तीन दिन तीन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा झूठी हुई या नहीं ?"

इस तरह यीसू का जन्म, मरण, सबके सब पूरे सन्देह से भरे हुए हैं। बुद्धि की आँखें बन्द करके ही इन्जील पर ईमान लाया जा सकता है।

अब एक और तुलना कीजिए—

जब मसीह को यह भासने लगा कि अब पकड़ा जाना निश्चित है तो उसने सिष्यों को जब वे उसके साथ भोजन पर बैठे थे कहा—

"मनुष्य का पुत्र जैसा उसके विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है। जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उसके लिए भला होता।" (मत्ति १४/२१)

"और वह पितर और याकूब और योहन को अपने संग ले गया और व्याकुय और बहुत उदास होने लगा।" ३३

"और उसने उनसे कहा मेरा मन यहाँ बहुत उदास है मैं मरने पर हूँ। तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।" ३५

और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमि पर गिरा और प्रार्थना की कि जो हो सके तो वह घड़ी उससे टल जाए।" ३६

उसने कहा, हे अब्बा, हे पिता तुझ से सब कुछ हो सकता है। यह कटोरा मेरे पास से टाल दे तो भी जो मैं चाहता हूँ सो न होय पर जो तू चाहता है। ३७ (मत्ति पर्व १४)

यहाँ यीसू की व्याकुलता देखिए। जो पादरी यह कहते हैं कि यह प्रोग्राम ईश्वर की ओर से निश्चित था। मसीह का बलिदान मनुष्यों के पापों के बदले में होना ही था तो वे पादरी बतायें कि फिर मसीह घबरा क्यों रहे हैं और इस कटोरे से बचना क्यों चाहते है। योसू स्वयं ही कहता है—

"मन तो तैयार शरीर दुर्बल है। (मत्ति १४/३९)

वास्तव में मानवी दुर्बलता मसीह में भी थी। यह दुर्बलता योगियों में नहीं होती। देशभक्त वीरों में नहीं होती। जो लोग परोपकार के लिए अपने को अर्पण करते हैं उनमें नहीं होती। मसीह का सारा प्रयत्न अपने को ईश्वर का भेजा खीष्ट सिद्ध करने के

लिए था उसे बार-बार यही चिन्ता है कि लोग मुझे क्या कहते हैं और शिष्यों से पूछता है कि तुम मुझे क्या समझते हो। इंजील पढ़ के देखो यीसू का सारा प्रयत्न अपने को मुक्तिदाता सिद्ध करने के लिए है। अब यह प्रोग्राम फेल होने लगा तो दुर्बलता सतावेगी ही। इसकी तुलना में बीर बन्दा वैरागी का बलिदान, कूकों की आत्माहुति, भाई मनिराम की कुर्बानी, खुदीराम बोस और रामप्रसाद बिस्मिल का आत्मबलिदान आदि सैकड़ों उदाहरण हैं। भारत माता की रज के कण-कण में सहस्रों यीसू भरे हुए हैं। भारत की मिट्टी तू धन्य है। ठीक ही कहा है कवि ने—

आओ बच्चों तुम्हें दिखायें
झाँकी हिन्दुस्तान की।
इस मिट्टी से तिलक करो
यह धरती है बलिदान की॥

भारत माँ के पुत्रों धिक्कार है तुम पर जरा जरा से सांसारिक लालच पर ईसाई बनते हो !! शोक

इसकी, तुलना में योगिराज भगवान् श्री कृष्ण के जीवन की एक घटना-देखिए—

भगवान् श्री कृष्ण जी पांडवों के दूत बन कर दुर्योधन को समझाने गए। दुर्योधन नें उनके उपदेश को ठुकरा दिया और उन्हें गिरफ्तार करने की ठानी। श्री कृष्ण जी को दुर्योधन के इस षड्यन्त्र का पता लग गया तो वे घबराने के बजाय धृतराष्ट्र से जाकर बोले-

राजन्नेते यदि क्रुद्धा मांनिऽगृह्णी-युरोजसा। एतेवा मामहं वैनान नुजानीहि वार्थिव ।। (महाभारत उद्योग पर्व अ० १३०/२४, २५)

हे राजन् क्रुद्ध हुए वे (दुर्योधनादि) मुझे पकड़ना चाहते हैं। कल वे मुझे पकड़ें या मैं उन्हें आप अनुमति दीजिए। बात यह थी कि उनमें शक्ति थी। सहस्र दुर्योधन भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। जब वे सभा में पहुंचे और दुर्योधन दल ने उन्हें पकड़ना चाहा तो पकड़ने वाले चकित रह गए। श्रीकृष्ण के पास अनेक देवता, सब वीर पाँडव और यादव शस्त्र अस्त्र लिये रक्षा के लिये तैयार खड़े दीखे। योगमाया के इस चमत्कार से दुर्योज़न पार्टी स्तब्ध रह गयी, भयभीत हो उठी। यह चमत्कार दिखाकर भगवान् श्रीकृष्ण सभा से प्रसन्नचित्त उठकर चले आये।

तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्यं माधवस्य सभातले ।
देवदुन्दुभयोनेदुः पुष्प वर्ष पपात च ।

श्री कृष्ण के इस आश्चर्य जनक चमत्कार को सभा में देखकर देवताओं ने नगाड़े बजाए और पुष्प-वर्षा की ।

महाराज धृतराष्ट्र ने भी श्रीकृष्ण जी की प्रशंसा की ।

अब विचारिए कि शक्तिमान् श्रीकृष्ण भगवान् का अनुयायी होकर गीता के उपदेशों पर चलना ठीक है कि निःशक्त निर्बल यीसू मसीह का अनुयायी होकर इंजील की गप्पों को मानना ठीक है !

यीसू है साधारण निर्बल व्यक्ति और भगवान् कृष्ण हैं योगिराज यो। के ऐश्वर्य से युक्त ।

भगवान् श्रीकृष्ण के देश में गीता की जन्मभूमि से ईसाइयत का प्रचार ऐसा ही है कि गुलाब के बाग में गुबरीलों का हुड़दंग

तर्क की तुला पर ईसाई मत हिन्दू धर्म के सामने बहुत हलका ठहरता है ।

जो भारतीय परिस्थिति वश ईसाई मत में जा

गिरे हैं उन्हें उठकर अपने प्राचीन सनातन आर्य धर्म (हिन्दू धर्म) को अपना लेना चाहिए। इसके लिए वे कहीं भी आर्य समाज में जाकर बात-चीत करके लाभ उठा सकते हैं।

यीसू की मृत्यु और जी उठना

ईसाई मत का मूल सिद्धान्त यह है कि हज़रत आदम ने ईश्वर की आज्ञा नहीं मानी और उस वृक्ष का फल खा लिया कि जिसके खाने को ईश्वर ने मना किया था। अतः आदम अनाज्ञाकारी पापी हुए और उनकी सब सन्तान भी पापी है क्योंकि खट्टे आम से पैदा हुए अन्य सभी आम्र वृक्ष खट्टे ही होंगे।

इसलिए ईश्वर ने एक जन आदमी के वीर्य से नहीं किन्तु अपने आत्मा से पैदा किया कि उसके नाम पर बप्तिस्मा लेकर मनुष्य का पापों से मोक्ष हो जायें। जैसे खट्टे आम पर मीठे आम की कलम चढ़ाई है तो वह मीठा हो जाता है इसी प्रकार पापी आत्माओं पर यीसू द्वारा पवित्रात्मा की कलम चढ़ाई जाती है। मनुष्यों के पापों के बदले निष्पाप यीसू ने क्रूस का दुःख

उठाया। अतः मनुष्यों का प्रायश्चित हो गया। यीसू का क्रूस पर मरना और फिर जी उठना यह विश्वास प्रत्येक ईसाई के लिए अनिवार्य है देखो......

'क्योंकि यदि मृतक नहीं जी उठते हूँ तो ख्रीष्ट भी नहीं जी उठा है। और यदि ख्रीष्ट नहीं जी उठा है तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ हे। तुम अबलों अपने पापों में पड़े हो।" (पाबलकी पहली पत्री करन्थियो को पर्व १५ वचन १७/१८)

यीसू मर कर जी उठा, बिना इस विश्वास के पाप दूर नहीं हो सकते।

"यीसू ने उनके पास आ उनसे कहा स्वर्ग में और पृथ्वी पर समस्त अधिकार मुझे दिया गया हैं। (१९)

इसलिए तुम जाके सब देशों के लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बप्तिस्मा देओ। (मत्ती पर्व २८)

मार्क कहता है—

और उसने (यीसू ने) उनसे (अपने शिष्यों से) कहा तुम सारे जगत् में जाके हर एक मनुष्य को

सुसमाचार सुनाओ जो विश्वास करे और बप्तिस्मा लेवे तो त्राण पायेगा।

परन्तु जो विश्वास न करे सो दण्ड के योग्य ठहराया जायगा। (१७)

और ये चिह्न विश्वास करने वालों के संग प्रकट होंगे। वे मेरे नाम से भूतों को निकालेंगे। वे नई-नई भाषा बोलेंगे। (१८)

वे साँपों को उठा लेंगे और जो वे कुछ विष पीवें तो उससे उनकी कुछ हानि न होगी। वे रोगियों पर हाथ रक्खेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।

(१९-पर्व १६)

१—अब यहाँ प्रश्न ये होते हैं कि आदम के पैदा होने से हज़ारों वर्ष तक आदम की संतान पापी बनती रही और ईश्वर को उसका इलाज नहीं सूझा। फिर क्या बात हुई कि ईश्वर का आत्मा यीसू के रूप में अवतरित हुआ और उसने सबके पापों का प्रायश्चित किया। मसीह के उत्पन्न होने से पहले लोग पापी ही मर गए और उनके हित के लिए ईश्वर ने कोई उपाय न किया। सृष्टि के सहस्रों (लाखों) वर्ष बाद ईश्वर

को यह कैसे सूझा' मसीह के पहले जन्मे हुए लोगों के साथ यह अन्याय रहा वा नहीं ?

और आज भी करोड़ों व्यक्ति ईसाइयत के इस नुसखे को नहीं जानते तो उनके पाप कैसे दूर होंगे ?

वैदिक धर्म ने आदि सृष्टि में ही मोक्ष के उपाय बता दिए जो आज तक एक से चले आते हैं। सब संसार के लिए एक से हैं। सब ही मनुष्यों के लिए सुलभ हैं। शुभ कर्म और ब्रह्म-ज्ञान। करना न करना मनुष्य का काम है।

२ - यदि बप्तिस्मा लेने से पवित्रात्मा की प्राप्ति होती है तो सब ईसाई पवित्र, निष्पाप होने चाहिए परन्तु ईसाई और गैर ईसाइयों में कोई भेद नहीं दीखता जैसे गैर ईसाई अच्छे और बुरे भी होते हैं, वैसे ही ईसाई भी। तो फिर बप्तिस्में से जब आत्मा बुद्धि, कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता तो कैसे माना जाय कि आदम की संतान में आदम से आया हुआ पाप बप्तिस्में से नष्ट हो गया ?

वह ऐसा ही अन्धविश्वास है जैसे हिन्दू कहते हैं गंगा स्नान से पाप दूर हो जाता है। जब तक मन में

परिवर्तन न आवे। मन पूर्ण पवित्र भावना वाला न दीखने लगे तब तक कैसे माना जाये कि पापी आत्मा में पवित्रात्मा की कलम लग गयी।

३—यीसू की आज्ञा है कि संसार भर को यह संदेश सुनाओ और बप्तिस्मा दो और जो विश्वास करेगा वह छुटकारा पावेगा अगर उसके साथ ये चिह्न होंगे जिससे पता चले कि इसने विश्वास किया वा नहीं?

"वे विष पी लेंगे और कोई हानि न होगी।" तो आज संसार में है कोई ईसाई जो अपने विश्वास की परीक्षा देने को विष पीने को तैयार हो? ईसाइयों के बड़े बड़े पादरी और "पोप पाल" तक इस परीक्षा में बैठने को तैयार नहीं। बिजनौर में पादरी रटेनली जोन्स" (अमेरिकन पादरी) से जब हमने कहा कि तोला भर अफीम खाकर वह अपने विश्वास की परीक्षा दे तो वह कहने लगा मार्क की ये आयतें मेरी समझ में नहीं आयीं। जब तक जहर खाकर, साँपों को उठा कर पादरी लोग परीक्षा नहीं देते तब तक इनके इस अन्धविश्वास की प्रामाणिकता असिद्ध है। फिर यीसू के ये वचन भी तो केवल अन्धविश्वास ही से भरे हैं।

मसीह की मृत्यु और जी उठने पर विश्वास करने से मोक्ष मिल जायगा तो गंगा स्नान से मोक्ष मिल जायगा। राम कथा सुनने से मोक्ष मिल जाएगा, इन बातों को भी क्यों न माना जाय? कोई तर्क युक्त सुसंगत युक्ति न ईसाइयों पर है न गंगा के पंडों पर। मुक्ति है वैदिक धर्म पर--सुकर्म से, ब्रह्मज्ञान से, अभ्यास से मनः शुद्धि करो। मन निर्मल होते ही भगवान् मिल जायेंगे।

४—यीसू कहता है कि यदि विश्वास न करेंगे तो दण्ड के योग ठहराए जायेंगे।" यह कितने अन्याय की बात है कि बुद्धि विरुद्ध यीसू की करामातों, यीसू के मरने और जी उठने पर जो विश्वास न करे वह दण्डनीय हो जाय। ईश्वर का यह कितना घोर अन्याय है कि मनुष्यों को बुद्धिहीन, तर्कहीन, अविवेकी बनने को विवश कर रहा है। यीसू के मरने और जी उटने से मनुष्य के चरित्र और मानसिक शुद्धि का क्या सम्बन्ध इंजील की ऊट पटांग गप्पों पर विश्वास क्यों किया जाये?

५—यीसू क्रूस पर चढ़ाया गया अथवा उसके बदले में उसके किसी और भक्त ने अपने को पकड़वा

दिया और यीसू बचकर कहीं और चला गया ऐसा भी कई मनुष्य सोचते हैं। इसीलिए हैरोद के सामने, पिलात के सामने वह पकड़ा हुआ मनुष्य ठीक-ठीक उत्तर न न दे सका। और उसकी मृत्यु भी क्रूस पर नहीं हुई थी। इंजील के अनुसार (योहन पर्व १६ आ० ३४) यीसू के शव की टाँगे नहीं तोड़ी और मान लिया गया कि वह मर चुका है और जब उसकी लाश में भाला चुभोया तो खून और पानी निकला (योहन पर्व १६ आयत ३५) ये लेख बताते हैं कि यदि क्रूस पर मसीह ही चढ़ाया गया तो वह पूरी तरह मरा नहीं था और फिर शीघ्रता से उसे कब्र में रख दिया गया और पहरेदारों से मिलकर रात में ही उसे निकालकर उस का इलाज कराया गया यह सब षड्यन्त्र था। यीसू क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया किन्तु अन्य व्यक्ति चढ़ाया गया इसके लिए ईसाई-मत के पड़ोसी इस्लाम की की साक्षी है —

"बक़ौलेहिम इन्ना क़त्लुल् मसीहा ईसब्ना मर्यमा रसूलिल्लाहे वमा क़त्लूहो, वमा सलबूहो।"

अर्थ—उनका (यहूदियों का) कथन है कि मर्यम के पुत्र खुदा के रसूल यीसू मसीह को क़त्ल कर दिया

गुरु विरजानन्द दण्डी
पुस्तकालय
(...) क्रमांक 5267
दयानन्द महिला महा...

मगर वे न क़त्ल किए गये न सलीब पर चढ़ाए गये।

(सूरते निसाअ रुकू २३)

"वाके में वह किसी और को सूली दे रहे थे। मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ कि हम ईसा को सूलो दे रहे हैं। और जो लोग इस बारे में इख़्तिलाफ़ करते और समझते हैं कि ईसा को सूली दी गयी तो इस मामले में ये लोग नाहक के शक में पड़े हैं। इनको इसकी वाकयी खबर तो नहीं। मगर सिर्फ़ अटकल के हीछे दौड़े चले जा रहे हैं। और यकीनन ईसा को लोगों ने क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त और और हिकमत वाला है।

(सूरते निसाअ तर्जुमा शमशुलउलमा मौ० नज़ीर अहमद)

यद्यपि न उन्होंने उनको वध किया और न उन्हें (यीसू को) सूली पर चढ़ाया। सूली वास्तव में दूसरे मनुष्य को दी गयी। लेकिन उन्हें उस पर ईसा का सन्देह हो गया और जिन लोगों को इस विषय में मतभेद है वह उसी सन्देह में पड़े हुए हैं। उन्हें उसकी (वास्एविक सच्चाई की) बिल्कुल खबर नहीं। "केवल

अटकल पर चल रहे है । निश्चित रूप से उनको उन्होंने बध नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया अल्लाह शक्तिशाली और बुद्धिमान् है (सूरते निसाअ ख्वाजा हसन निजामी का भाष्य हिन्दी में) कुरान शरीफ की आयत और दो मुसलमान विद्वानो का भाष्य प्रस्तुत है । इस्लाम के मत में यीसू क्रूस पर नहीं चढ़े किन्तु कोई और चढ़ा दिया गया । यीसू का सलीब पर चढ़ाये जाना केवल अटकल है । अस्तु—यीसू मसीह सूली पर, क्रूस पर चढ़े हों वा न चढ़े हों मर गए हों, वा न मरे हों, जी उठे हों बा न जिये हों, इसके लिए मनुष्य को अपने मस्तिष्क का व्यायाम करके बुद्धि को थकाने से क्या प्रयोजन हैं ?

इस संदिग्ध घटनाओं के मानने न मानने से मनुष्य के मानसिक आध्यात्मिक उन्नति से क्या सम्बन्ध इन गपोड़ों को मानने वाले सहस्त्रों ईसाई भी भ्रष्ट चरित्र वाले और कपटी देखे जाते हैं और न मानने वाले ग़ैर ईसाई भीं पवित्र चरित्र और निर्मल हृदय देखे जाते हैं तो फिर बप्तिस्में का सिद्धान्त अव्याप्ति तथा असम्भव दोषों से दूषित बन जाता है ।

कैसे अंधेर की बात है कि मार्क की इंजील के अनुसार जो इन गपोड़ों पर विश्वास न करेगा वह दंडनीय ठहरेगा। क्यों ठहरेगा ? क्या यह बेहूदा बात खुदा की हो सकती है ? मजहब चलाकर यीसू के नाम पर मौज मारने वाले पोप पादरियों ने ये अन्ध-विश्वास रचकर जनता पर बड़े-बड़े अत्याचार किये हैं। (पढ़ो यूरोप और विशेषकर स्पेन के कारनामे)। अब तो पोप की राजनैतिक सत्ता ही समाप्त हो गयी है। तभी से यूरोप ने वैज्ञानिक उन्नति की है। प्रजातन्त्र भी फूला फला हैं।

आर्य धर्म—वैदिक धर्मी, संत मतानुयायी, कबीर पंथी, नामक पंथी आदि जैन बौद्ध सबकी शिक्षा केवल यही है कि चरित्र अच्छा बनाओ, सब पर दया करो दम्भ छोड़कर ईश्वर की भक्ति करो तो स्वर्ग पाओगे।

"सरल स्वभाव न मन कुटिलाई।
यथा लाभ सन्तोष सदा ही॥
कोमल चित दीनन पर दाया।
मन बच कर्म मम भक्ति अमाया॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी।

भरत प्राण सम ममते प्राणी ।।"

राम की शिक्षा है कि चरित्र बनाओ। गीता में श्री कृष्ण की शिक्षा है कि चरित्र बनाओ, योगी बनो। मगर ईसाई मत की शिक्षा है—केवल ईसा के जीवन मरण सम्बन्धी घटनाओं को मान लो, चाहे वे कितनी ही बुद्धि विरुद्ध भी हों तो सब पाप क्षमा हो जायेंगे और मुक्ति मिलेगी। अब विचारो कि पाप का दमन करने का उपदेश देने वाला हिन्दू धर्म ठीक है वा पाप को प्रोत्साहित करने वाला ईसाई मत ? बुद्धि संगत तर्क संगत हिन्दू धर्म ठीक है या बुद्धि विरुद्ध तर्क से खंडित ईसाई मत ?

अब इंजील के अनुसार ही आर्य धर्म के "कर्मवाद" का महत्व देखिए—

"हे मेरे भाइयो ! यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म उससे नहीं होते तो क्या लाभ ? क्या उस विश्वास से उसका त्राण हो सकता है ? यदि कोई भाई बहिन नंगे हों और उन्हें प्रतिदिन के भोजन की घटी हो और तुम में से कोई उनसे कहे कुशल से जाओ तुम्हें ज़ाड़ा न लगे, तुम तृप्त रहो, परन्तु तुम जो वस्तु

देह के लिए अवश्य है सो उनको न देओ तो क्या लाभ है ? वैसे ही विश्वास भी जो कर्म सहित न होवे तो आप ही मृतक है । (१५--१८)

हे निर्बुद्धि मनुष्य क्या तू जानना चाहता है कि कर्म बिना विश्वास मृतक है । २१

(याकूद प्रेरित की पत्री पर्व २०)

आर्य धर्मों ने विश्वासों का एका-धिकार नहीं रक्खा क्योंकि इससेही मजहबी झगड़े होते हैं राम के द्वारा हो या कृष्ण के द्वारा हो, महावीर से सीखो वा बुद्ध से, नानक की मानो या कबीर की, शंकर की सुनो वा दयानन्द की । वेद, गीता, रामायण, उपनिषद् गुरुग्रन्थ, साहब, कबीर के शब्द, जैन बौद्ध शास्त्र, यहाँ तक कि सर्वतोनास्तिक चार्वाक भी चरित्र पर जोर देते हैं ।

१-"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवेच्छतं समा: ।"

२-"ऋतस्य पंथाँ नतरन्ति दुष्कृत: ।"

३-"सहृदयं साम्मनस्यमविद्वेषं कृणोमिव: ।"

४-"यस्मिन् त् सर्वाणि भूतान्यात्मै-वाभूद विजानत: ।"

गुरु विरजानन्द दार्थ
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रह क्रमांक 5267
दयानन्द महिला म

५-"मागृधः कस्यस्विद्धनम् ।"

६-"केवलाघोभवति केवलादी ।"

७-"समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः ।"

(१) काम करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करो निकम्मे न रहो ।

(२) दुराचारी लोग सत्य के मार्ग को नहीं जान सकते ।

(३) सहृदय रहो. सम्यक् मन वाले वा सम्मिलित मन वाले रहो, किसी से द्वेष मत करो ।

(४) ज्ञानी वह है जो सब प्राणियों को आत्तवत् जाने ।

(५) किसी का धन मत लो ।

(६) जो अकेला ही भोग भोगता है वह पापी है (सब को बाँटकर खाओ) ।

(७) भोजनादि जीवन के साधन सबके लिए मिलें । (वेद वचन)

॥ समाप्त ॥

❋ सूचना ❋

१ अब पंडित बिहारी लाल शास्त्री नें ट्रक्ट लिखना प्रारम्भ कर दिए हैं ।

२ वेद वाणी पुस्तक छप रही है ।

प्रेम पुस्तक भन्डार

बिहारीपुर, बरेली ।